

समानता और समीपता

सदा निर्मान और निर्माण करने के कार्य में सदा तत्पर रहने वाले और बच्चों को आप-समान स्वमान-धारी बनाने वाले बाबा बोले:—

क्या बापदादा समान स्वमान-धारी, स्वदर्शन-चक्रधारी और निर्माण बने हो? जितना-जितना इन विशेष धारणाओं में समान बनते जाते हो उतना ही समय को समीप लाते हो। समय को जानने के लिये अभी कितना समय पडा है? इसकी परख आपकी धारणाओं में समान स्थिति है। अब बताओ कि समय कितना समीप है? समानता में समीप हो तो समय भी समीप है। इस प्रोग्राम के बीच अपने-आपको परखने व अपने द्वारा समय को जानने का समय मिला है। इस विशेष मास के अन्दर दो मुख्य बातें मुख्य रूप से लक्ष्य के रूप में सामने रखनी हैं। वो कौन-सी? एक तो लव (त्दन) और दूसरा लवलीन।

कर्म में, वाणी में, सम्पर्क में व सम्बन्ध में लव और स्मृति में व स्थिति में लवलीन रहना है। जो जितना लवली त्दनत्) होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है। इस लवलीन स्थिति को मनुष्यात्माओं ने लीन की अवस्था कह दिया है। बाप में लव खत्म करके सिर्फ लीन शब्द को पकड़ लिया है। तो इस मास के अन्दर इन दोनों ही मुख्य विशेषताओं की धारण कर बापदादा समान बनना है। बापदादा की मुख्य विशेषता, जिसने कि आप सबको विशेष बनाया, सब-कुछ भुलाया और देही अभिमानी बनाया, वह यही थी लव और लवलीन।

लव ने आप सबको भी एक सेकेण्ड में ५००० वर्ष की विस्मृत हुई बातों को स्मृति में लाया है, सर्व सम्बन्ध में लाया है, सर्वस्व त्यागी बनाया है। जबकि बाप ने एक ही विशेषता से एक ही सेकेण्ड में अपना बना लिया तो आप सब भी इस विशेषता को धारण कर बाप-समान बने हो? जबकि साकार बाप में इस विशेषता में परसेन्टेज (जिमर्ही) नहीं देखी, परफेक्ट (जीमू) ही देखा तो आप विशेष आआत्माओं और बाप समान बनी हुई आत्माओं को भी परफेक्ट होना है। इस मुख्य विशेषता में परसेन्टेज नहीं होनी चाहिए। परफेक्ट होना है। क्योंकि इस द्वारा ही सर्व आत्माओं के भाग्य व लक्क को जगा सकते हो। लक्क (luck) के लॉक (lock) की चाबी (key) कौन-सी है?—‘लव’। लव की लॉक की ‘की’ (key) है। यह ‘मास्टर-की’ (master-key) है। कैसे भी दुर्भाग्यशाली को भाग्यशाली बनाती है। क्या इसके स्वयं अनुभवी हो?

जितना-जितना बापदादा से लव जुटता है, उतना ही बुद्धि का ताला खुलता जाता है। लव कम तो लक्क भी कम। तो सर्व आत्माओं के लक्क के लॉक को खोलने वाली चाबी आपके पास है? कहीं इस लक्क की चाबी को खो तो नहीं देते हो? या माया भिन्न-भिन्न रूपों व रंगों में इस चाबी को चुरा तो नहीं लेती है? माया की भी नजर

इसी चाबी पर है। इसलिये इस चाबी को सदा कायम रखना है। लव अनेक वस्तुओं में होता है। यदि कोई भी वस्तु में लव है तो बाप से लव परसेन्टेज में हो जाता है। अपनी देह में, अपनी कोई भी वस्तु में यदि अपनापन है तो समझो कि लव में परसेन्टेज है। अपनेपन को मिटाना ही बाप की समानता को लाना है। जहाँ अपना-पन है, वहाँ बापदादा सदा साथ नहीं हैं।

परसेन्टेज वाली कभी भी परफेक्ट नहीं बन सकता। परसेन्टेज अर्थात् डिफेक्ट (defect) वाला कभी परफेक्ट नहीं बन सकता, इसलिये इस वर्ष में परसेन्टेज को मिटा कर परफेक्ट बनो। तब यह वर्ष विनाश की वर्षा लायेगा। एक वर्ष का समय दे रहे हैं जो कि फिर यह उलहाना न दें कि “हमको क्या पता” एक वर्ष अनेक वर्षों की श्रेष्ठ प्रारब्ध बनाने के निमित्त है। अपने आप ही चेकर (checker) बन अपने आप को चैक (check) करना अगर मुख्य इस बात में अपने को परफेक्ट बनाया तो अनेक प्रकार के डिफेक्ट स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे यह तो सहज पुरुषार्थ है ना? अगर स्वयं बाप के साथ लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज ही आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे। तो यह वर्ष बाप-समान बनने का लक्ष्य रख कर चलेंगे, तो बापदादा भी ऐसे बच्चों को “तत् त्वम्” का वरदान देने के लिये बच्चों को ड्रामानुसार निमित्त बना हुआ है। इस वर्ष की विशेषता बाप-समान बन समय को समीप लाने का है। समय की विशेषता को स्वयं में लाना है।

ऐसे सदा लवली-लवलीन रहने वाले बाप-समान निर्माण और निर्माण करने के कर्तव्य में सदा तत्पर रहने वाले, समय की विशेषता को स्वयं में लाने वाले श्रेष्ठ समान में सदा स्थित रहने वाले श्रेष्ठ और समान आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते। ओम शान्ति।

इस वाणी का सार

1. यदि कोई भी वस्तु में और अपनी देह में अपना-पन है तो ज़रूर बाप से लव में परसेन्टेज है, अपने-पन को मिटाना ही स्वयं में बाप की समानता को लाना है।
2. दो मुख्य बातें लक्ष्य रूप में सामने रखनी हैं। एक तो ‘लव दूसरा ‘लवलीन’। जो जितना लवली होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है।